B.A. (Hons.) Political Science VI Semester,

M.A. (Political Science) IV Semester,

Title of Lecture - Behaviouralism, (व्यवहारवाद).

व्यवहारवाद

(Behaviouralism)

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद राजनीति शास्त्र के क्षेत्र में जिस नए दृष्टिकोण का जन्म हुआ, वह है-व्यवहारवादी दृष्टिकोण, द्वितीय विश्व युद्ध से पहले राजनीति शास्त्र का अध्ययन परम्परावादी दृष्टिकोण से किया जाता था। इस दृष्टिकोण के दोषों तथा सैद्धान्तिक कठोरता ने सभी जागरुक राजनीतिक विश्लेषकों में वैचारिक असंतोष को जन्म दिया। इस वैचारिक असंतोष के कारण ही व्यवहारवादी आन्दोलन का जन्म हुआ। इस आन्दोलन ने मानवीय व्यवहार को राज्य और राजनीतिक संस्थाओं के पाश से बाहर निकालकर स्वतन्त्र रूप से अध्ययन का केन्द्र बिन्दु बनाया। इस व्यवहारवादी क्रान्ति ने राजनीति शास्त्र के लक्ष्य, स्वरूप, विषय क्षेत्र आदि सभी को बदल डाला। इसके परिणामस्वरूप राजनीति विज्ञान में अनुभववादी (Empirical) विधियों का प्रयोग शुरू हुआ और राजनीति शास्त्र तथा समाज विज्ञानों में आपसी सम्बन्धों में निकटता आई। इसने राजनीति शास्त्र को संस्थागत, कानूनी तथा दार्शनिकता की सीमा से बाहर निकालकर नया रूप दिया। इसने राजनीति शास्त्र को न केवल राजनीति-विज्ञान बना दिया, बल्कि इसे राजनीति का विज्ञान भी बनाने का प्रयास किया।

व्यवहारवाद का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Behaviouralism)

व्यवहारवाद के अर्थ के सम्बन्ध में व्यवहारवादियों के विचारों में एकरूपता का अभाव है। कुछ विद्वानों के अनुसार व्यवहारवाद एक मनोदशा तथा मनोवृत्ति है। व्यवहारवाद के जनक डेविड ईस्टन के अनुसार यह व्यक्ति की वैज्ञानिक मनोदशा का प्रतिबिम्ब है। ईस्टन ने उसे बौद्धिक प्रवृत्ति, तथ्यात्मक शैक्षणिक आन्दोलन, व्यवहारवादी क्रान्ति आदि नामों से सम्बोधित किया है।

रॉबर्ट ए. डहल ने व्यवहारवाद को परम्परावादी पद्धति का सैद्धान्तिकता के विरुद्ध एक विरोध आन्दोलन की संज्ञा दी है। अत: व्यवहारवादी उपागम में अध्ययन का केन्द्र-बिन्दु संस्थाएँ न होकर व्यक्ति का राजनीतिक व्यवहार है। व्यवहारवाद में व्यक्ति के व्यवहार का एक सामाजिक संगठन के सदस्य के रूप में विश्लेषण किया जाता है । यह अध्ययन पद्धति अपना ध्यान राजनीतिक व्यवहार पर केन्द्रित करती है और राजनीतिक व्यवहार के माध्यम से राजनीति, संगठन, प्रक्रिया तथा समस्याओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करती है। यह एक व्यापक अवधारणा है, जो मनोदशा, मनोवृत्ति सिद्धान्त कार्यविधि पद्धति दृष्टिकोण अनुसन्धान तथा सुधार आन्दोलन है। व्यवहारवाद मानव की क्रियाओं से सम्बन्धित है और समाज में मानव-व्यवहार से सम्बन्धित सामान्य अनुमान स्थापित करने का उद्देश्य रखता है। व्यवहारवाद राजनीति विज्ञान को अनुभवमूलक विज्ञान बनाता है।

रॉबर्ट ए. डहल, "व्यवहारवादी क्रान्ति परम्परागत राजनीति विज्ञान की उपलब्धियों के प्रति असन्तोष का परिणाम है, जिसका उद्देश्य राजनीति विज्ञान को अधिक वैज्ञानिक बनाना है।"

Robert A. Dahl, "The behavioral revolution is the result of discontent with the achievements of traditional political science, which aims to make political science more scientific."

जोसेफ डनर के अनुसार, “व्यवहारवाद सामाजिक घटना का पूर्वाभिमुखीकरण है, जो मुख्य रूप से अनुभववाद, तार्किक, प्रत्यक्षवाद और अनुशासनिक स्वार्थों से सम्बन्धित रहता है।"

According to Joseph Dunner, "Pragmatism is the preoccupation of social phenomena, which is primarily concerned with empiricism, rationalism, positivism, and disciplinary interests."

डेविड ट्रूमैन, “व्यवहारवाद एक ऐसे विचार का प्रतिनिधित्व करता है जिसका उद्देश्य सभी राजनीतिक घटनाओं को मानव के अवलोकित तथा अवलोकनात्मक व्यवहार के आधार पर विवेचित करना है।”

David Truman, "Pragmatism represents an idea that aims to explain all political events on the basis of observable and observable behavior of humans."

व्यवहारवाद का विकास (Development of Behaviouralism)

व्यवहारवाद का ऐतिहासिक विकास संयुक्त राज्य अमेरिका में राजनीति विज्ञान के यथार्थवादी एवं अनुभवादी अध्ययनों के साथ जुड़ा हुआ है। इसका प्रारंभ 1908 में ग्राहम वालस की **Human nature in politics** ए. बेंटले की **The process of government** पुस्तकों से हुआ। इसके बाद 1925 में प्रकाशित चार्ल्स मेरियम की रचना **New aspects of politics** को व्यवहारवाद की दिशा में एक महत्वपूर्ण चरण कहा जा सकता है। अमेरिका में मेरियम की प्रेरणा से यथार्थवादी एवं परिमाणात्मक अध्ययन किए गए और सुप्रसिद्ध ‘शिकागो संप्रदाय’ व्यवहारवाद का प्रमुख गढ़ बन गया। नव स्थापित पॉलीटिकल साइंस एसोसिएशन और सोशल साइंस रिसर्च काउंसिल तथा फोर्ड कार्नेगी जैसी निजी संस्थाओं से इसे सहायता तथा शक्ति मिली, जिससे व्यवहारवादी दृष्टिकोण सर्वव्यापक हो गया।

व्यवहारवाद की उत्पत्ति के कारण (Causes of the origin of Behaviouralism)

1.परंपरावादियों के प्रति असंतोष- परंपरावादी मूल्यों पर अत्यधिक बल देते थे तथा तथ्यों की उपेक्षा करते थे|

2.स्वतंत्र राष्ट्रों की संख्या में भारी वृद्धि

3. राजनीतिक प्रभुत्व का विस्तार

4. चार्ल्स मेरियम के प्रयास

5. द्वितीय विश्वयुद्ध और राजनीतिविदों का परंपरागत विषय सामग्री से मोहभंग

6. कुछ अमेरिकी संस्थाओं की विशेष भूमिका

व्यवहारवाद की विशेषताएं (Characteristics of Behaviourism)

सभी व्यवहारवादी विचारकों ने व्यवहारवाद का विकास करने में अपनी सभी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। लेकिन डेविड ईस्टन ने व्यवहारवाद को एक बौद्धिक आन्दोलन बनाकर अपना विशेष योगदान दिया। उसने चाल्सवर्थ द्वारा सम्पादित पुस्तक **'Contemporary Political Analysis'** में अपना निबन्ध **'The cuurent meaning of Behaviouralism'** लिखकर व्यवहारवाद को विकसित किया। डेविड ईस्टन ने व्यवहारवाद की आठ विशेषताओं का वर्णन किया है। ये विशेषताएं हैं-

1. नियमितताएं (Regularities); ईस्टन का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति के राजनीतिक व्यवहार में कुछ ऐसी प्रवृत्तियां पाई जाती हैं जो बार-बार देखने को मिलती हैं। इन बार-बार होने वाली प्रवृत्तियों के आधार पर उपयोगी निष्कर्ष निकालकर उन्हें सिद्धान्त का रूप दिया जा सकता है। यद्यपि यह व्यवहार कई अवसरों पर भिन्न हो सकता है, लेकिन व्यक्ति भिन्न अवसरों पर कुछ बातों के बारे में अपनी समान राय ही प्रकट करता हैं व्यक्ति के व्यवहार की बारम्बारता या नियमितताएं कानून, नियमों व उपनियमों का आधार होती हैं। इन्हीं के आधार पर राजनीतिक व्यवहार का नियमतन होता है और चुनाव के समय समस्त राजनीतिक घटनाक्रम को समझा जा सकता है। इस नियमित व्यवहार के कारण ही प्राकृतिक विज्ञानों की तरह भविष्यवाणी भी की जा

सकती है। इसलिए सभी व्यवहारवादी विचारकों ने राजनीति व्यवहार को नियमितताओं की खोज करके शुद्ध राजनीतिक सिद्धान्तों के निर्माण का मार्ग तैयार किया है।

2. सत्यापन (Verification); व्यवहारवादियों का मानना हे कि मानव के राजनीतिक व्यवहार की नियमितताओं का सामान्यीकरण या निष्कर्ष परीक्षण या सत्यापन योग्य होना चाहिए। सत्यापन वैज्ञानिक विधि का आधार है। जब तक नियमितताओं की जांच व परीक्षण नहीं किया जाएगा तो वैज्ञानिक सिद्धान्त का मार्ग प्रशस्त नही होगा। उदाहरण के लिए चुनाव के समय मतदान व्यवहार के बारे में उपयोगी निष्कर्ष सत्यापन विधि द्वारा ही निकाले जा सकते हैं। इस तरह समस्त राजनीतिक घटनाओं को समझने के लिए नियमितताओं का सत्यापन होना जरूरी है। इसलिए व्यवहारवादियों ने राजनीतिक व्यवहार की नियमितताओं के परीक्षण या सत्यापन पर जोर दिया है।

3. तकनीक या प्रविधियां (Techniques); व्यवहारवादी अध्ययन के आनुभविक तरीकों, पद्धतियों और प्रविधि पर बहुत जोर देते हैं। व्यवहारवादियों का कहना है कि तथ्यों, आंकड़ों तथा नियमितताओं को प्राप्त करने के लिए हमें मान्य शोध -प्रविधियों का ही सहारा लेना चाहिए। विषय सामग्री प्राप्त करने तथा उसकी प्रामाणिकता की जांच करने के लिए ऐसी प्रविधियों या तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए जे बार-बार परीक्षण में सहायक हो, क्योंकि आधार सामग्री एवं उसका निर्वचन करने वाले साधन स्वयं सिद्ध नहीं होते। एक उचित प्रविधि के अभाव में उपलब्ध आंकड़े भी निरर्थक साबित हो सकते हैं। नए तथ्यों के परीक्षण के लिए नई व उन्नत तकनीक का ही सहारा लेना चाहिए। उचित साधन या तकनीक ही उपयोगी अध्ययन व निष्कर्ष का आधार होती है। इसलिए शोध कार्यों में ऐसे उपकरणों या प्रविधियों का ही प्रयोग करना चाहिए जिनके आधार पर सुसंगत, विश्वसनीय और तुलनात्मक व उपयोगी सामग्री प्राप्त हो सके।

4.परिमाणीकरण (Quantification); व्यवहारवादियों का मानना है कि राजनीतिक व्यवहार बहुत जटिल होता है, इसलिए उसका मापन भी एक कठिन कार्य है। किन्तु

बिना मापन के मात्रात्मक तथ्य भी अनुपयोगी रहते हैं इसलिए अध्ययन के विवरण तथा आधार-सामग्री को लक्ष्यों के अनुरूप बनाने के लिए माप एवं परिमाणन की जरूरत पड़ती है। इससे अध्ययन में सुक्ष्मता एवं परिशुद्धता आती है और तथ्यों में भी सुनिश्चितता तथा स्पष्टता आती है। इसलिए तथ्यों को प्रामाणिक बनाने के लिए तथ्यों का परिमाणन करते रहना चाहिए।

5. मूल्य (Values); व्यवहारवादी मूल्य निरपेक्षता पर जोर देते हैं। उनका कहना है कि तथ्यों और मूल्यों में कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन मूल्यों को ध्यान में रखकर किया जाएगा तो उसमें अध्ययनकर्ता के निजी मूल्यों, आदर्शों व भावनाओं के शामिल होने का डर बना रहेगा और प्राप्त निष्कर्ष भेदभावपूर्ण व अनुपयोगी होंगे। राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन आनुभाविक प्रणालियों पर आधारित होने के कारण उसका मूल्यों से कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता। इसलिए तथ्यों और मूल्यों का अलग-अलग अध्ययन करना चाहिए। जहां तक सम्भव हो राजनीतिक व्यवहार के अध्ययन को मूल्य निरपेक्ष ही बनाने का प्रयास करना चाहिए। इसके द्वारा ही सही निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

6. क्रमबद्धता या व्यवस्थीकरण (Systematization); व्यवहारवादियों का कहना है कि राजनीति विज्ञान में शोध व्यवस्थित होनी चाहिए अर्थात सिद्धान्त निर्देशित होनी चाहिए। यदि शोध सिद्धान्त से अनुप्रमाणित नहीं होगी तो वह महत्वहीन रहेगी और यदि वह सिद्धान्त सामग्री से समर्थित नहीं है तो भी वह निरर्थक रहेगी। इसलिए अध्ययन, अवलोकन, तथ्य संग्रह, सिद्धान्त निर्माण, सत्यापन आदि सभी में क्रमबद्धता रहनी चाहिए। इसलिए प्रत्येक शोध कार्य सिद्धान्त के साथ जुड़ा होना चाहिए। अर्थात् उसमें क्रमबद्धता या व्यवस्थीकरण का गुण होना चाहिए।

7. विशुद्ध विज्ञान (Pure Science); व्यवहारवादियों का कहना है कि कोई भी शोध सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से नहीं संचालित होनी चाहिए। ज्ञान की खोज स्वयं ही सामाजिक समस्याओं के समाधान में उपयोगी बन सकती है। सिद्धान्त और प्रयोग

दोनों ही वैज्ञानिक प्रयत्नों के अंग होते हैं। राजनीतिक व्यवहार को समझना तथा उसका विश्लेषण करना प्राथमिक आवश्यकता होनी चाहिए। उसके बाद उसकी सामाजिक उपादेयता पर विचार करना चाहिए। अर्थात् अर्जित ज्ञान की कसौटी केवल सैद्धान्तिक तथा शुद्ध वैज्ञानिक होनी चाहिए। इसी से राजनीति-शास्त्र को विशुद्ध विज्ञान बनाया जा सकता है।

8. एकीकरण या समायोजन (Integration); व्यवहारवादियों का मानना है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसकी सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व अन्य सभी प्रकार की गतिविधियां उसके व्यवहार से बराबर जुड़ी हुई है। इसलिए मनुष्य की प्रत्येक गतिविधि उसके सम्पूर्ण जीवन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में ही समझी जा सकती है। इसलिए मानवीय परिस्थितियों की निकटता के कारण सभी सामाजिक विज्ञान एक दूसरे के निकट हैं। इसलिए कोई भी राजनीतिक विद्वान अन्य सामाज विज्ञानों में हो रहे शोध की उपेक्षा नहीं कर सकता। यदि उसने ऐसा किया तो उसके शोध के परिणाम अप्रमाणिक और असामान्य होंगे। अत: राजनीतिक वैज्ञानिक को अन्य सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्रों में हो रहे शोध कार्यों पर अपनी गहरी व तीव्र दृष्टि रखनी चाहिए और अन्त:अनुशासनात्मकता का पोषण करना चाहिए। अन्य अनुशासनों (विज्ञानों) की मदद के बिना राजनीति-विज्ञान कभी समृद्ध नहीं हो सकता।

इस प्रकार डेविड ईस्टन द्वारा बताई गई व्यवहारवाद की विशेषताएं उसे परम्परावादी दृष्टिकोणसे पृथक करती हैं। इन विशेषताओं में व्यवहारवादी विश्लेषण की पूर्व-धारणाएं, लक्ष्य और बौद्धिक आधार शामिल हैं। यह विश्लेषण राजनीति विज्ञान में आनुभाविक प्रवधियों के प्रयोग के साथ-साथ उसे परिशुद्ध विज्ञान के लिए भी प्रयासरत् है। व्यवहारवादी क्रान्ति ने राजनीति शास्त्र को नई दिशा प्रदान की है और उसे एक अन्तर:अनुशासित दृष्टिकोण बनाने का प्रयास किया है।

व्यवहारवाद का कार्यक्षेत्र (Subject matter of Behaviouralism)

व्यवहारवाद एक विकासशील अवधारणा है। इसका क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो व्यवहारवाद के अन्तर्गत न आ सके। आज बहु-पद्धति विज्ञान, व्यवस्था विश्लेषण, प्रकार्यवादी उपागम, समाजशास्त्रीय उपागम आदि ने इसके वास्तविक स्वरूप में परिवर्तन कर दिया है। इसलिए व्यवहारवाद के कार्यक्षेत्र को निश्चित करना कठिन हो गया है। राजनीतिक शास्त्र में हम राजनीति व्यवहार का ही अध्ययन करते हैं। इसके अन्तर्गत मनुष्य के राजनीति व्यवहार की समस्त गतिविधियां शामिल हैं। डेविड ट्रमैन ने कहा है-व्यवहारवाद में शासन की प्रक्रिया से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों और समूहों के समस्त कार्य और अन्त:क्रियाएं आ जाती हैं। इसके अध्ययन क्षेत्र में-मतदान व्यवहार, विधानमण्डलीय व्यवहार, न्यायपालिका व्यवहार, प्रशासनिक व्यवहार, सामुदयिक व्यवहार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार, व्यवहारवाद के विश्लेष्ण-जैसे समूह, शक्ति, निर्णय, नीति-निर्माण तथा व्यापक अवधारणाओं-जैसे व्यवस्था, क्षेत्र, प्रक्रिया, संचार आदि को शामिल किया जाता है। व्यवहारवादियों-जिसमें हींज यूलाऊ का विशेष योगदान है। हींज यूलाऊ ने व्यवहारवाद के अध्ययन क्षेत्र में निम्न विषय शामिल किए हैं-

1. व्यक्तियों के आपसी सम्बन्ध (Individuals Engaged in face to face relationship)
2. छोटे समूहों व संगठनों का व्यक्ति या समष्टि रूप (Small groups and organisations)
3. राजनीतिक व्यवस्थाएं तथा उप व्यवस्थाएं; जैसे- राजनीतिक दल, दबाव समूह तथा व्यवस्थापिकाएं (Systems and sub systems like political parties legislatures, pressure groups etc.)
4. मतदान व्यवहार (Voting behaviour)
5. संकल्प, शक्ति, प्रक्रियाएं, निर्णय, समूह, संरचना आदि अवधारणाएं (Concepts such as will power, processes, dicision, structures and functions, system etc.)

6. प्रक्रियाएं (Process)

7. नीतियां व मूल्य (Policies and values)

8. तुलनात्मक राजनीति (Comparative politics)

9. नवीन उपकरण तथा प्रविधियां (New tools and techniques)

10. राजनीतिक सिद्धान्त व उपागम (Political theories and Approaches)

व्यवहारवाद की सीमाएं (Limitations of Behaviouralism)

व्यवहारवादी दृष्टिकोण नि:सन्देह एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है। उसने राजनीति शास्त्र के क्षेत्र और प्रकृति में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है। उसने राजनीतक व्यवहार के अध्ययन द्वारा राजनीति-शास्त्र को नई दिशा दी है, लेकिन फिर भी यह दृष्टिकोण कई दुर्बलताओं का शिकार है और इसकी अपनी कुछ सीमाएं हें। इसकी सीमाओं को हींज यूलाऊ, मलफोर्ड सिबली, स्टीफन एल. वासबी आदि विद्वानों ने निम्न प्रकार से स्पष्ट किया है-

1. मूल्य-निरपेक्षता की सीमा; व्यवहारवादी अध्ययन अपने आपको मूल्य निरपेक्ष मानता है, लेकिन कोई भी जीवित प्राणी अपने अध्ययन में पूर्ण रूप से मूल्यों से दूर नहीं रह सकता। समस्या का चयन करते समय शोधकर्ता के निजी मूल्य स्वत: ही अध्ययन में शामिल हो जाते हैं। सिबली ने अपने लेख **'Limitations of Behaviouralism'** में लिखा है-''मूल्य किसी भी शोध से पहले आते हैं, चाहे वह राजनीति क्षेत्र में हो या अन्य में। शोधकर्ता की कुछ प्राथमिकता उसके अध्ययन से ज्यादा महत्वपूर्ण होती है।'' इसी तरह हीज यूलाऊ ने अपने लेख **'Segments of Political Science most Susceptible to Behaviouristic Treatment'** में लिखा है कि ''व्यवहारवादी स्वयं को मूल्य निरपेक्ष मानता है, लेकिन स्वयं व्यवहारवादी का व्यक्तित्व, उसका आचरण, उसके ज्ञान की सीमाएं, साधन, राग-द्वेष, झुकाव, पक्षपात आदि उसके व्यवहारात्मक

अध्ययन के महत्वपूर्ण चर हैं। विषयों का चयन करते समय वह अपने मूल्यों और विचारधारा से प्रभावित होता हैं ये मूल्य अध्ययन के 'क्या' और 'कैसे' को निर्धारित करते हैं।''

2. नीति-निर्माण के क्षेत्र में भी व्यवहारवाद का प्रयोग सीमित स्तर पर होता है, क्योंकि व्यवहारवाद से प्राप्त निष्कर्षों के अलावा नीति-निर्माण की प्रक्रिया पर अन्य कारकों का भी प्रभाव पड़ता है।

3. व्यवहारवाद का सम्बन्ध केवल 'क्या' से है। जैविक निर्णय देना व्यवहारवाद का काम नहीं है। इसलिए यह केवल वास्तविकता का ही चित्रण करता है। किसी समस्या के हल करने के उपाय बताए बिना राजनीति-शास्त्र में किसी भी विश्लेषण का कोई महत्व नहीं रह जाता है। 'क्या होना चाहिए' के अभाव में व्यवहारवादी विश्लेषण एक अपूर्ण दृष्टिकोण है।

4. समसामयिक राजनीतिक समस्याओं की व्याख्या करने व उनका सर्वमान्य हल प्रस्तुत करने में व्यवहारवाद प्राय: असफल रहता है। व्यवहारवादी केवल स्थाई दशाओं के अध्ययन पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं।

5. व्यवहारवादी व्यक्ति के रजनीतिक व्यवहार की व्याख्या केवल कुछ विशेष मान्यताओं और परिस्थितियों के सन्दर्भ में ही करते हैं। इसलिए राजनीतिक व्यवहार की हर परिस्थिति में सम्पूर्ण व्याख्या करना व्यवहारवादियों के लिए असम्भव होता है।

6. व्यवहारवादी विश्लेषण पूर्ण विश्लेषण नहीं है। इसके खिलाफ उत्तर-व्यवहारवाद का जन्म लेना इसकी अपूर्णता को दर्शाता है। व्यवहारवादियों ने स्वयं ही व्यवहारवादी मान्यताओं का खण्डन किया है।

7. व्यवहारवादी विश्लेषण में अध्ययनकर्ता का राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन करने वाली प्रक्रिया पर कोई नियन्त्रण नहीं होता है। अध्ययनकर्ता अपनी इच्छानुसार न तो

राजनीतिक व्यवहार के घटकों को चुन सकता है और न ही उनका विश्लेषण करते समय उन पर अपना नियन्त्रण रख सकता है।

8. व्यवहारवादी अध्ययन सभी परिस्थितियों के लिए अन्तिम मूल्य प्रस्तुत नहीं कर सकता। इससे प्राप्त निष्कर्षों को कुछ विशेष परिस्थतियों में ही लागू किया जा सकता है।

9. व्यवहारवादी प्रविधियों और यन्त्रों के चयन पर ही अधिक जोर देते हैं। वे अध्ययन में इनसे प्राप्त परिणामों की परवाह नहीं करते हैं।

इस प्रकार व्यवहारवादी विश्लेषण एक अपूर्ण विश्लेषण है। इसके निष्कर्ष समान परिस्थितियों के उत्पन्न होने पर ही लागू हो सकते हैं। यह भविष्य में मनुष्य किस प्रकार का आचरण करेंगे, बताने में असमर्थ हैं। इसमें इस बात का कोई ध्यान नहीं रखा जाता कि तथ्य, मूल्य और पर्यवेक्षक परस्पर सम्बन्धित होते हैं और विज्ञान के भी स्वयं के अपने मूल्य होते हैं। व्यवहारवादी अध्ययन अध्ययनकर्ता को सम- सामयिक राजनीति से अलग कर देता है। नीति-निर्माण के क्षेत्र में भी इसका प्रयोग सीमित होता है। व्यवहारवादी प्रविधियों व अध्ययन से प्राप्त परिणामों की अवहेलना हो जाती है। व्यवहारवाद कुछ पूर्व-निश्चित मान्यताओं पर आधारित होने के कारण व्यापक व पूर्ण विश्लेषण नहीं बन सका। इसलिए यह आलोचना का शिकार हुआ।

व्यवहारवाद की आलोचनाएं (Criticisms of Behaviouralism)

मलफोर्ड सिबली, स्टीफन एल0 वासबी, हीज यूलाऊ, रेमने, डाहल, कार्ल ड्यूश, एवरी लीसारसन, क्रिश्चियन बे, एल्फ्रैड कब्बन, किर्क पैट्रिक आदि विद्वानों ने व्यवहारवाद की आलोचनएं की हैं-

1. व्यवहारवादी दृष्टिकोण का प्रयोग नीति-निर्माण के क्षेत्र में नहीं किया जा सकता है। यह नीति-शास्त्र का विरोधी है।

2. व्यवहारवादी तकनीकों व पद्धतियों पर अधिक जोर देते हैं, विषय वस्तु पर नहीं। इससे सम्पूर्ण विश्व का अध्ययन करना असम्भव होता है।

3. व्यवहारवादी दूसरे सामाजिक विज्ञानों पर अधिक आश्रित हैं। वे अपने अध्ययन के लिए दूसरे शास्त्रों की प्रविधियों व पद्धतियों पर अधिकाधिक निर्भर होते जा रहे हैं। सिबली ने कहा है-''व्यवहारवादियों का शोध कार्य समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान से अधिक प्रभावित है।''

4. व्यवहारवादियों के आचरण में विरोधाभास पाया जाता हैं वे अपने आपको मूल्य-निरपेक्ष विज्ञानी बताते हैं, परन्तु उनका अध्ययन मूल्य निरपेक्ष नहीं है। वे स्वयं दूसरे शास्त्रों की पद्धतियों को प्रयोग करते हैं और फिर भी किसी अन्य अध्ययन पद्धति को मान्यता देने के लिए तैयार नहीं है।

5. व्यवहारवादियों ने मानव व्यवहार का विज्ञान प्रस्तुत करने में अब तक असफलता ही प्राप्त की है। हींज यूलाऊ, किर्क पैट्रिक, डाहल आदि का कहना है कि करोड़ों डोलर खर्च करने के बाद भी व्यवहारवादी एक विश्वसनीय, व्यापक, सत्यापित और सन्तोषप्रद राजनीति का विज्ञान बनाने में असफल रहे हैं।

6. व्यवहारवादी इस बात को भूल जाते हैं कि प्राकृतिक विज्ञानों एवं राजनीति विज्ञान के तथ्यों में बहुत अधिक अन्तर होता है। इस दृष्टि से पद्धतियों और प्रविधियों को दोनों में समान रूप से प्रयोग करना असम्भव है। राजनीतिक वैज्ञानिक प्राकृतिक विज्ञानों की पद्धतियों को राजनीतिक विज्ञान में थोपने का प्रयास करते हैं। इन दोनों विज्ञानों को समान बनाने का प्रयास तर्कसंगत नहीं है। एवरी लीसरसन का कहना है कि व्यवहारवादी प्राय: अतर्कसंगत तथा महत्वहीन आंकड़े एकत्रित करने में लगे रहते हैं।

7. व्यवहारवादी दृष्टिकोण संकुचित व काल्पनिक है। एल्फ्रैड कॉबन ने कहा है कि यह उपागम बिना विज्ञान को प्राप्त किए, राजनीति के खतरनाक चक्कर से बचने

के लिए विश्वविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अविष्कृत युक्ति हैं। ये शिक्षक इन्द्रपुरी या कल्पना-लोक के निवासी हैं जहां मूल्य, इतिहस, संस्कृति व परम्पराएं आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ी हों, उनको पृथक करके देखना संकुचित दृष्टिकोण का परिचायक है। व्यवहारवादी राजनीतिक घटनाओं को मूल्यों से पृथक करके देखते हैं इसके कारण व्यवहारवादी दृष्टिकोण संकुचित बनकर रह गया है। इसलिए व्यवहारवाद से प्राप्त ज्ञान सीमित ज्ञान है।

व्यवहारवाद का योगदान : राजनीति विज्ञान में महत्व

(CONTRIBUTION OF THE BEHAVIOURALISM : SIGNIFICANCE IN POLITICAL SCIENCE)

व्यवहारवाद के फलस्वरूप आज राजनीति विज्ञान को 'नवीन राजनीति विज्ञान' के नाम से पुकारा जाने लगा है। इसके साहित्य में पिछले तीन दशकों में आशातीत वृद्धि हुई है। व्यवहारवाद के प्रयासों के फलस्वरूप संस्थाओं के औपचारिक अध्ययन को चुनौती दी गयी है। निगमन प्रणाली के प्रतिपादकों को भी इसने अपनी आलोचना का केन्द्र बनाया है और राजनीतिशास्त्र में बहुत से विचारक आज तथ्यों के महत्व को स्वीकार करने लगे हैं। चुनाव अध्ययन के क्षेत्र में, विशेषकर मतदाता व्यवहार के क्षेत्र में, इसने नवीन क्षितिजों को ढूंढ़ा है। व्यावहारिकवाद का प्रभाव विधायिनी, न्यायिक और प्रशासनिक व्यवहार के अध्ययन में भी प्रवेश कर चुका है। तथ्यों के संकलन, प्रक्रमीकरण (Processing) और विश्लेषण करने में तथा प्रश्नावली, ग्राफ, गणितीय प्रतीकों और सांख्यिकी सारणियों और कम्प्यूटरों का प्रयोग कर व्यावहारिकवाद ने राजनीतिक शोध की नयी दुनिया का निर्माण किया है। व्यवहारवाद ने आधुनिक राजनीतिशास्त्र को नवीन मान्यताएं प्रदान की हैं और नये विश्लेषणात्मक औजार दिये हैं। इसके प्रभाव के कारण आज राज्य को केन्द्रीय संगठनात्मक सत्ता न मानकर, व्यक्ति की इकाई को अध्ययन का केन्द्र माना जा रहा है। सूक्ष्म अध्ययनों (micro-studies) का सूत्रपात हुआ है, शक्ति के अध्ययन का स्थान निर्णय-निर्माण (decision making) को दिया जा रहा है; व्यक्ति के व्यवहार के प्रेरकों की अनुभवमूलक व्याख्याएं की जा रही हैं और इस प्रयास में राजनीतिशास्त्र के साथ मनोविज्ञान, समाजशास्त्र जैसे समाज विज्ञानों द्वारा दिया जा रहा है। आज के राजनीतिशास्त्र का संकेन्द्र व्यक्ति, प्रक्रिया तथा तथ्य बन रहे हैं। इसके तथ्यपूर्ण निष्कर्षों ने नीति निर्माण में योगदान करके राजनीतिशास्त्र को 'सामाजिक इन्जीनियरी' का एक माध्यम बनाने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया है।